Yayawari
via bhojpuri

NotNul

तोहार नाव का हऽ

सत्य व्यास

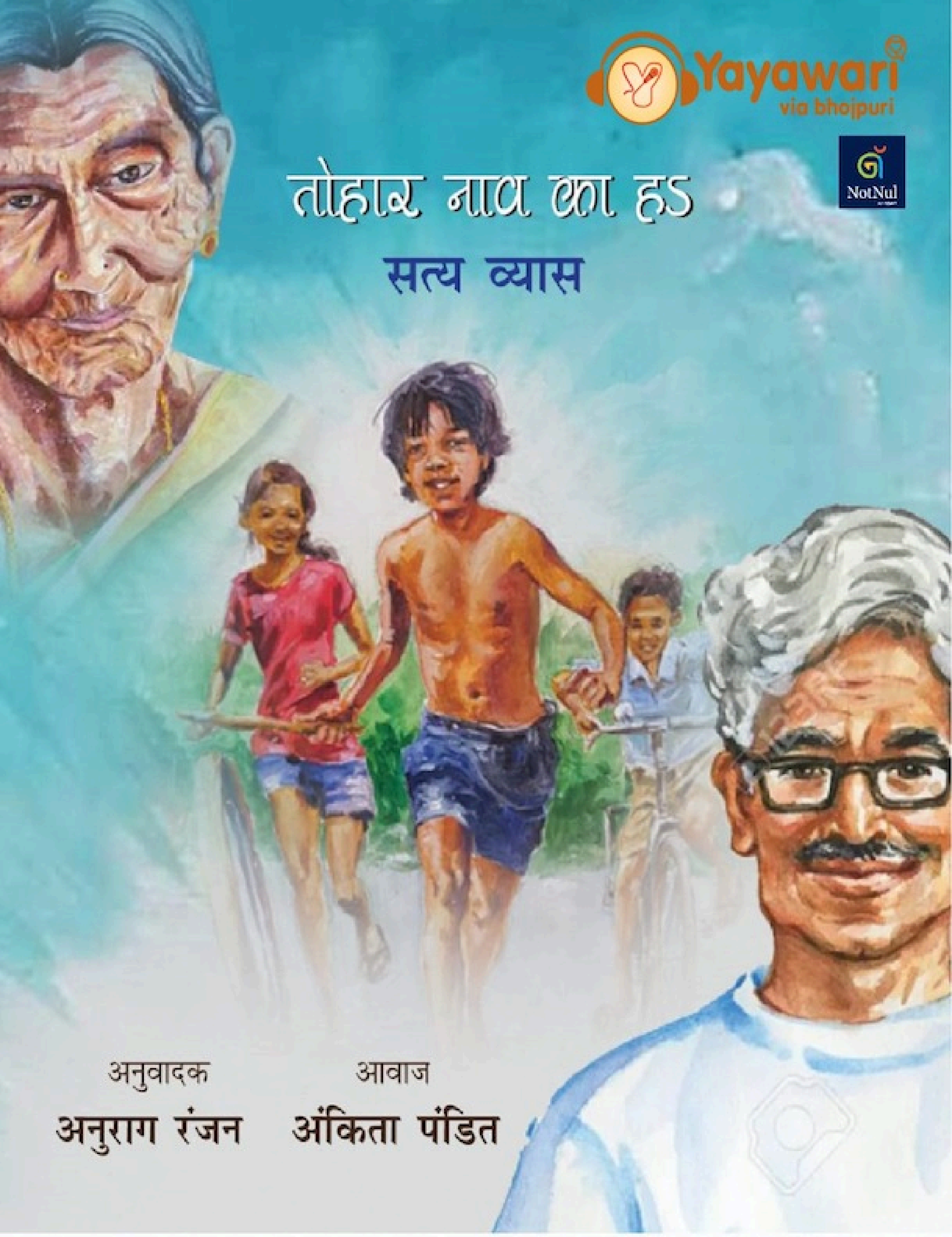

अनुवादक
अनुराग रंजन

आवाज
अंकिता पंडित

तोहार नाव का ह

कहानी

लेखक- सत्य व्यास

अनुवादक- अनुराग रंजन

ईश्वर बृज" फ़ाउंडेशन के तहत माटी परियोजना के अंतर्गत अनूदित

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: नवम्बर, 2022

खुभा बो। हां इहे त नाव रहे उनकर ! पहली बेर उनका के तब देखले रहीं जब ईया के तबियत ख़राब भइल रहे आ बाबूजी हमनी के लेके गांवे गईल रहन। ईया के सेवा उहे करत रही। देखल जाए त उनुको उमिर ईया से कम ना रहे; बाकिर उनुका सेवा में धर्म बुझाये आ ऊ सेवा करस।

खुभा बो। दलगीर ठाकुर के माई । दलगीर गाँव भर के दाढ़ी-बार बनावस अरु अपना महतारी के खूब मानस। खूभा बो उहो दिन देखले बाड़ी की दलगीर 50 रूपया दिन के कमास अरु कूल्ह पईसा खूभा बो के हाथ में डाल देस। बाकिर फेर दलगीर के बियाह हो गईल आ दलगीर पईसा मेहरारू के आँचर में बान्हे लगले। एक दिन हल्ला उठल की खुभा बो टाट में से पईसा निकालत रही आ पतोह देख लिहलस। बस फेर का रहे दलगीर अपना रोअत मेहरारू के बात मनले आ चुप महतारी के घर से निकाल दिहले। ओही दिन से खूभा बो हमरा ईया के संगे बाड़ी। मालिस से लेके उठावल बइठावल सब उहे करावेली।

खूभा बो। चार फुट से तनिये बेसी होखिहें। उमिर 70 पार। पीयर गोर उनका चेहरा पर उमिर के कारण कई गो धारी परत रहे। हंसिहे त मुंहे में; आ रोअल केहू उनकर देखले ना रहे। ईया कहेली कि खुभा बो एके बेर रोअल रही- जब खूभा मुअल रहन । ओकरा